यहूदा का पत्र

लेखकः

यीशु मसीह का आधा छोटा भाई और याकूब का भाई।

समयः

68 और 80 ए.डी. के बीच

विषयः

जो लोग चर्च में मसीह की सच्चाई से इन्कार करते हैं और अपने झूठे सिद्धान्त को सिखाते हैं, उनके विषय में यहूदा लिखता है। परमेश्वर की आत्मा की प्रेरणा से वह उनकी शिक्षा और जीवन शैली की ज़ोरदार शब्दों में निन्दा करता है। पद 3 में मुख्य विचार है-उस विश्वास के लिए गरमजोशी से संघर्ष करते रहो, जिसे एक ही बार सन्तों (विश्वासियों) को सौंपा गया था।

1यीशु मसीह के सेवक और याकूब के
भाई यहूदा की तरफ़ से उन बुलाए हुओं
के नाम जो परमेश्वर पिता के द्वारा पवित्र
किये गए हैं तथा यीशु मसीह के लिए
सुरक्षित हैं, 2तुम्हें कृपा, शान्ति और प्रेम
बहुतायत से मिलता रहे।
3हे प्रियो, जब मैं उस मुक्ति के बारे में
तुम्हें लिखने की हर कोशिश कर रहा था
जिसमें हम सब शामिल हैं, तो मैंने यह
लिखना और बिनती करना ज़रूरी समझा
कि तुम उस विश्वास के लिए बड़ी गर्मजोशी
से कोशिश करते रहो जो हमेशा के लिए
यीशु के लोगों को सौंपा गया था। 4क्योंकि
तमाम लोग जो इस गुनाह के पहले ही से

1:1यहूदा का अर्थ है "जिसकी महिमा की गयी है।" यह नए नियम का वही नाम है जो पुराने नियम में है। यह निश्चित लगता है कि यह यहूदा यीशु मसीह का आधा भाई था (मत्ती 13:55; न्यायियों 7:3)। यीशु की मौत और जी उठने के पहले वह यीशु पर विश्वास नहीं करता था, किन्तु बाद में हम उसे विश्वासियों के साथ प्रे. काम 1:14 और 1 कुरि. 9:5 में देखते हैं।

"सेवक"- रोमि. 1:1.

"याकूब"- याकूब 1:1.

"बुलाए हुओं"- रोमि. 1:6-7; 8:28,30; 9:24; 1 कुरि. 1:9; गल. 1:6,15; इफ़ि. 1:18; फ़िलि. 3:14; 2 थिस्स. 2:14; 2 तीमु. 1:9; 1 पतर. 2:9; 3:9; 5:10; 2 पतर. 1:10.

"पवित्र किये गए"- प्रे.काम 20:32; 26:18; रोमि. 15:16; 1 कुरि. 1:2; 6:11; इब्रा. 10:10,14.

"सुरक्षित"- यूहन्ना 6:37-40; 10:27-28; 17:11-12; रोमि. 5:9-10; 8:28-30,35-39; 1 कुरि. 1:8-9; 1 पतर. 1:5.

1:2 "कृपा"- रोमि. 9:15-16; 11:32; 12:1; 15:9; इफ़ि. 2:4; तीतुस 3:5. जब विश्वासी अपनी दुष्टता और अज्ञानता में असहाय थे, परमेश्वर ने उन्हें अपनी दया से बचाया। यह नालायक के लिए दया और अनुग्रह का एक कदम था। यह परमेश्वर की दया हमारे लिए आज भी है और यह परमेश्वर की कृपा, शान्ति की नींव है।

"शान्ति"- रोमि. 1:7. ऐसी मन और ह्रदय की शान्ति, जो परमेश्वर और विश्वासियों के साथ सही सम्बन्ध के फलस्वरूप आती है।

"प्रेम"- परमेश्वरीय प्यार - यूहन्ना 13:34; रोमि. 5:5; 1 कुरि. 13:1; इफ़ि. 3:17 देखें। यह इसलिए मिलता है क्योंकि हम ने परमेश्वर की दया और शान्ति प्राप्त की है। यह सब से बड़ा गुण है (1 कुरि. 13:13)। इसका स्त्रोत परमेश्वर हैं, जो प्रेम हैं (1 यूहन्ना 4:7-8)।

1:3 "मुक्ति"- रोमि. 1:6 के नोट्स देखें। यहूदा कुछ बड़ी और महिमा से भरी बातों के विषय में लिखना चाहता था, किन्तु कुछ दूसरा विषय जो दिलचस्प नहीं था, उस पर लिखने की आवश्यकता समझी।

"कोशिश"- यूनानी शब्द युद्ध क्षेत्र में होने वाले युद्ध को दिखाता है। विश्वासी इसी युद्ध क्षेत्र में हैं। इफ़ि. 6:11-18; 1 तीमु. 6:12 से तुलना करें। इस पृथ्वी पर और मसीही संसार में परमेश्वर द्वारा प्रकट किए गए सत्य के विषय में एक युद्ध जारी है।

"ज़रूरी समझा"- चर्च को इसकी आवश्यकता थी और पूरा मसीही समाज खतरे में था। परमेश्वर का आत्मा उसमें (यहूदा में) कार्य कर रहा था और उस पर दबाव डाल रहा था।

"विश्वास"- यहाँ यहूदा का अर्थ विश्वास के भीतरी अनुभव से नहीं है, किन्तु उस 'सत्य' से जिसे परमेश्वर ने मसीह के माध्यम से दिया है। यीशु और उनके शिष्यों ने यह सिखाया कि हमें क्या विश्वास करना चाहिए और कैसे जीना चाहिए। यह "विश्वास" है। यह काफ़ी नहीं है कि हम सही सिद्धान्तों (शिक्षा) को पकड़े रहें (हालांकि यह आवश्यक है) हमें इस शिक्षा के आधार पर जीवन भी जीना चाहिए (इफ़ि. 4:1; कुल. 1:10; 1 थिस्स. 2:12)। यहाँ पर यहूदा इस पत्र में केवल शिक्षा की बात नहीं करता है किन्तु सही शिक्षा और सही व्यवहार के बारे में भी। वह उस गलती की ओर संकेत करता है जो अपवित्र जीवन है और वह गलत शिक्षा का परिणाम है।

"यीशु के लोगों को"- रोमि. 1:7.

"सौंपा गया था"- जिस विश्वास को परमेश्वर ने मसीह और उनके प्रेरितों द्वारा प्रगट किया वह पूरा (पूर्ण) है। इस में न ही कुछ जोड़ा जा सकता है, न ही निकाला जा सकता है। व्यव. 4:2; नीति. 30:6; प्रका. 22:18-19 से तुलना करें। कोई भी नयी शिक्षा निश्चित रीति से झूठी होगी। परमेश्वर ने विश्वासियों को सत्य दिया

दोषी ठहराए जा चुके हैं, चुपके से हमारे बीच घुस गए हैं। वे दुष्ट हैं और परमेश्वर की कृपा को, अनियन्त्रित वासना में बदल चुके हैं। वे हमारे एक मात्र मालिक परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह का इन्कार करते हैं।

5मैं तुम्हें याद दिलाना चाहता हूँ यद्यपि तुम पहले से जानते थे कि मिस्त्र देश की गुलामी से निकाले हुए लोगों में से, भरोसा न रखने वालों को प्रभु ने बर्बाद कर डाला था।

6जिन स्वर्गदूतों ने अपने पहले पद को संभाल कर न रखा और अपने निवास को छोड़ डाला, उन्हें परमेश्वर ने सदा काल के लिए बेड़ियों से जकड़कर भयंकर इन्साफ़ के दिन के लिए अँधेरे में रखा है।

7जिस तरह से सदोम, अमोरा और उनके आस पास के इलाके, जो अस्वाभाविक यौन सम्बन्धों में डूबकर पराए लोगों की देह के पीछे पड़ गए थे, कभी न बुझने वाली आग की सज़ा पाकर एक नमूना ठहरे थे।

है ताकि उस पर आक्रमण होने पर वे उसे बनाए रखें, अभ्यास करें और उसकी रक्षा करें। 1 कुरि. 4:1; 1 थिस्स. 2:4; 1 तीमु. 1:11; 6:20 और 2 तीमु.1:14 देखें।

1:4 यहाँ यहूदा ने एक खतरा देखा। मसीहियों में एक भयानक गलत शिक्षा फैल रही थी। वह यह थीः इसलिए कि परमेश्वर के अनुग्रह से उद्धार मिलता है इसलिए कि उद्धार पूरी तरह से परमेश्वर का कार्य है और अच्छे कामों पर निर्भर नहीं है, मसीही लोग जैसा चाहें, जी सकते हैं। चाहे वे कुछ क्यों न करें, कैसे भी जीएँ, अनुग्रह उन्हें क्षमा करेगा। रोमि. 6:1 से तुलना करें। आज भी यह गलत शिक्षा प्रचलित है।

"चुपके से"- 2 पतर. 2:1. प्रायः झूठे शिक्षक खुले रीति से और ईमानदारी से सामने नहीं आते हैं। वे चोरों की तरह आ जाते हैं। सत्य के साथ झूठ मिलाकर वे इसे और अधिक धोखा देने वाली बना देते हैं।

"अनियन्त्रित वासना"- वे मसीही और यीशु के शिष्य होने का दावा करते थे, किन्तु उनका जीवन बिल्कुल भिन्न था। अनुग्रह को अनियन्त्रित अभिलाषा में बदल डालते हैं - ऐसा लगता है कि कुरिन्थ में मसीही होने का दावा करने वालों का विचार ऐसा ही था (1 कुरि. 5:1-2; 6:9,12)। तीतुस 2:11-14 में देखें कि परमेश्वर का अनुग्रह क्या सिखाता है। इफ़ि. 4:19-24 भी देखें।

"मात्र मालिक"- यहाँ यूनानी शब्द का अर्थ है "डेस्पोटेज़" और जिसका अर्थ है सारे अधिकार का स्वामी। लूका 2:28-29 और प्रे.काम 4:24 में यह नाम परमेश्वर को दिया गया है। इसलिए कि मसीह ही मात्र सार्वभौमिक हैं, इसका अर्थ है मसीह परमेश्वर हैं, जैसा कि इस पद का आखिरी भाग बताता है।

"परमेश्वर और प्रभु"- 2 पतर. 1:1 से तुलना करें।

"इन्कार"- 2 पतर. 2:1 इन्कार, कार्य और शब्द दोनों ही से होता है। इन लोगों ने अपने ऊपर मसीह की प्रभुता से इन्कार किया, किन्तु शायद उन्हों ने कहा होगा कि वे उसे प्रभु मानते हैं।

1:5 "याद दिलाना"- 2 पतर. 1:12-15.

"प्रभु"- यह नाम (कुरियोस) नए नियम में सभी जगह मसीह को ही दिया गया है। पहले के पदों में भी यहूदा उसे प्रभु कहता है। इस में वह कहता है कि प्रभु ने अपने लोगों को मिस्त्र से छुड़ाया। इस ऐतिहासिक ब्यौरे में, याहवे थे, जिन्होंने लोगों को छुड़ाया था। निर्ग. 3:7-12; 18:10; और 19:2 देखें। इसका अर्थ हुआ कि यहूदा परमेश्वर और यीशु को समान देख रहा है। लूका 2:11 में प्रभु पर पद देखें।

"बर्बाद कर डाला" - इब्रा. 3:16-19; 1 कुरि. 10:1-6; गिनती 14:11,22,23; भजन 78:22,32,33; 106:15,18,24-26,29.

1:6 "पहले पद"- 2 पतर. 2:4.

"निवास"- स्वर्ग

"दिन"- अन्तिम न्याय का दिन (प्रका. 20:11-15)।

1:7 "जिस तरह से"- इसका अर्थ यह लगता है कि सदोम के लोगों का पाप और पद 6 में स्वर्गदूतों का पाप एक ही था। उत्पत्ति 6:1-4 से तुलना करें।

"अस्वाभाविक"- उत्पत्ति 19 अध्याय।

"आग"- 2 पतर. 2:6; मला. 4:1; मत्ती 3:10,12; 25:41.

8ये स्वप्नदर्शी, उसी तरह देह को अशुद्ध
करते, अधिकार का अनादर करते और
प्रतिष्ठित लोगों की बुराई करते हैं। 9लेकिन
प्रधान स्वर्गदूत मीकाईल ने जब मूसा
की लाश के बारे में शैतान से बहस की,
तो उसने बेइज़्ज़त करने वाले शब्दों का
इस्तेमाल करने की हिम्मत न की, लेकिन
कहा, "प्रभु तुम्हें डाँटें।" 10लेकिन ये लोग
जिन बातों को समझते नहीं, उनके विरोध
में बोलते हैं। और बेसमझ जानवरों की
तरह जिन बातों को स्वभाव ही से जानते
हैं, उन्हीं के द्वारा बर्बाद हो जाते हैं।

11धिक्कार उन पर, क्योंकि उन्हों ने कैन
की जीवन शैली अपनायी, अपने लाभ
के लिए बिना सोचे समझे बिलाम की सी
गलती कर बैठे और कोरह की तरह बलवा
करके बर्बाद हो गए।

12ये लोग तुम्हारी प्रेम सभाओं में
तुम्हारे साथ शामिल तो होते हैं। ये बिना
हिचकिचाहट अपना ही पेट भरने वाले
रखवाले हैं। ये बिना पानी वाले बादल
हैं, जिन्हें हवा उड़ा ले जाती है। पतझड़
के बिना फल वाले पेड़ हैं, जो दो बार मर
चुके हैं और जड़ से उखड़ गए हैं। 13ये

1:8 "स्वप्नदर्शी"- वास्तविकता से ये लोग इस प्रकार दूर थे कि कामुकता से भरे हुए थे। स्वप्नदर्शी का अर्थ यह हो सकता है, कि ये लोग 'दर्शन' के द्वारा परमेश्वर से प्रकाशन (ज्ञान) का दावा कर रहे थे (व्यव. 13:1-3; यिर्म. 23:25-26)।

"देह को अशुद्ध करते"- रोमि. 1:24; 1 कुरि. 6:18.

"अधिकार का अनादर करते"- ऊँचे पद वालों को तुच्छ जानते - 2 पतर. 2:10.

1:9 "मीकाईल"- दानि. 10:13,21; 12:1; प्रका. 12:7. प्रधान स्वर्गदूत, स्वर्गदूतों में सब से ऊँचा स्थान रखता है।

"मूसा की लाश के बारे"- इस घटना का वर्णन बाईबल में नहीं है। हमें यह नहीं मालूम कि झगड़ा किस बात का था। हमारे लिए यह जानना आवश्यक भी नहीं - व्यव. 29:29.

"शैतान"- मत्ती 4:1 पर नोट्स देखें।

"प्रभु तुम्हें डाँटें"- शैतान के विषय में बातें करते समय देखिए, मीकाईल कितना सावधान था। उसने दूसरे पर दोष लगाने और दण्ड देने के कार्य को परमेश्वर के हाथों में छोड़ दिया, जैसा हमें भी करना चाहिए।

1:10 "उनके विरोध में बोलते हैं"- 2 पतर. 2:12 यह उनकी दुष्टता और घमण्ड को दिखाता है।

1:11 "धिक्कार उन पर"- यशा. 3:11; मत्ती 18:7.

"कैन"- उत्पत्ति 4:1-12 देखें। कैन की सी चाल, बलिदान के बारे में परमेश्वर के निर्देश को अनदेखा करना है और जिन्हें परमेश्वर स्वीकार करते हैं, उन से घृणा करना है। देखें इब्रा. 11:4; 1 यूहन्ना 3:12.

बालाम की सी गलती - 2 पतर. 2:15 कोरह की तरह बलवा - गिनती अध्याय 16. जिस प्रकार से परमेश्वर का विरोध कोरह ने किया। इस पद में हम देखते हैं कि परमेश्वर से खाली लोगों के मन में तीन बातें हैं -

(1) सत्य और सत्य पर चलने चालों के विरोध में नफ़रत

(2) जो कुछ भी वे प्राप्त कर सकते हैं, उसके प्रति लोभ और

(3) परमेश्वर के प्रति बलवे का मन।

1:12 "प्रेम सभाओं"- 1 कुरि. 11:20-22 पर नोट्स देखें।

"हिचकिचाहट"- उनका विवेक उन्हें नहीं सताता है, उनके लिए परमेश्वर की चेतावनियों का कोई मूल्य नहीं हैं 1 तीमु. 4:2.

"अपना ही पेट भरने वाले"- जो कुछ वे करते थे उसके बीच में लालच, स्वार्थ और दूसरों के प्रति लापरवाही थी। तुलना करें। यहेज. 34:1-10; यिर्म. 10:21; 12:10; 23:1.

"बिना पानी वाले बादल हैं"- ऐसे बादल जिनसे तरोताज़ा करने वाली वर्षा की अपेक्षा की जाती है, किन्तु वे कुछ देते नहीं (नीति. 25:14)

"उड़ा ले जाती है"- 2 पतर. 2:17.

"बिना फल वाले"- बिना किसी अच्छे फल के (वे बुरे फल अधिक उत्पन्न करते हैं)। मत्ती 21:18-19; लूका 13:6-7 से तुलना करें।

"दो बार मर चुके हैं"- अपराधों और पाप में मरे हैं (इफ़ि. 2:1) उनका जिया गया जीवन उनकी मौत की पुष्टि करता है (1 तीमु. 5:6)।

समुद्र की तेज़ लहरें हैं, जो अपनी बेशर्मी का झाग उछालते हैं। ये डावाँडोल तारे हैं, जिनके लिए सदा का गहरा अन्धेरा ठहराया गया है।

14हनोक ने भी जो आदम से सातवीं पीढ़ी में था, इन के बारे में यह भविष्यवाणी की थी, "देखो, प्रभु अपने लाखों पवित्र लोगों के साथ आए, 15ताकि सब दुष्टों का उनकी दुष्टता के कामों के लिए न्याय करें। इसलिए भी कि उन लोगों को दोषी ठहराएँ जिन्होंने यीशु के विषय अनाप-शनाप कहा था।

16ये कुड़कुड़ाने वाले, असंतुष्ट, अपनी वासनाओं के गुलाम, घमण्ड से भरकर बात करने वाले और अपने फ़ायदे के लिए लोगों की चापलूसी करने वाले लोग हैं।

17लेकिन हे प्रियो, तुम उन बातों को ज़रूर याद रखो जिन्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रेरित पहले ही से कह चुके हैं। 18वे तुम से कहा करते थे, "अन्त के दिनों में ऐसे ठट्ठा करने वाले होंगे, जो अपनी दुष्टता से भरी अभिलाषाओं के अनुसार जीवन जीएँगे।" 19वे फूट डालने वाले, पवित्र आत्मा रहित और सांसारिक हैं।

20लेकिन हे प्रियो, तुम अपने अति पवित्र

वे आत्मिक रीति से मरे थे और जिस सत्य का इन्कार किया उसके प्रति भी। वे दूसरी मृत्यु की ओर चले जा रहे थे (प्रका. 20:14)। यहूदा ने यह संकेत दिया कि यह उनकी करनी का फल है। अपनी उदण्डता, अविश्वास और विद्रोह के फलस्वरूप उन्हों ने मसीह में मिलने वाले अनन्त जीवन की संभावना से अपने आपको मुक्त कर लिया है। वे ऐसे वृक्ष थे जो परमेश्वर द्वारा नहीं लगाए गए थे, इसीलिए उन में आत्मिक जीवन नहीं था। वे उखड़ गए, ताकि आत्मिक जीवन की कोई आशा बाकी न रहे।

"जड़ से उखड़ गए"- मत्ती 15:13. परमेश्वर ने इन लोगों को नहीं लगाया था। उनका किसी से भी कोई सम्पर्क नहीं था, जिससे उनके जीवन में अच्छा फल लग सके। सच्चे विश्वासी जो हैं और जैसे उन्हें होना चाहिए, वे उसके बिल्कुल उल्टे हैं - इफ़ि. 3:17; कुल. 2:7.

1:13 "तेज़ लहरें"- बिना विश्राम के जो अपनी अभिलाषाओं से हिलाए डुलाए जाते हैं यशा. 57:20-21 से तुलना करें।

"बेशर्मी का झाग"- उनके मन की गदंगी जो कार्यों में प्रगट होती है।

"डावाँडोल तारे"- मसीह के चारों ओर उनकी कोई परिधि सीमा नहीं है और मसीहियों के सामने रखे लक्ष्य की ओर वे नहीं चले जा रहे हैं (फ़िलि. 3:14)।

"अन्धेरा"- 2 पतर. 2:17 तुलना करें फ़िलि. 2:15; दानि. 12:3.

1:14-15 उत्पत्ति 5:18,21-24 यह पद बाईबल में से नहीं है। पवित्र आत्मा ने यहूदा को हजारों वर्ष पहले हनोक द्वारा कहे गए शब्दों को कहने के लिए प्रेरित किया। (एक पुस्तक हनोक की किताब में विचित्र कहानियाँ है, जो परमेश्वर द्वारा प्रेरित नहीं हैं। यह सिद्ध करना कठिन है कि यहूदा ने उसका उपयोग किया)। यहूदा यदि हनोक को भविष्यद्वक्ता न कहता, तो हमको मालूम भी नहीं पड़ता जैसा कि आज भी है। हनोक के दिनों में भक्तिहीनता सामान्य बात थी। इसलिए वह इसकी तेज़ निन्दा करता है।

"लोगों"- हनोक की भविष्यवाणी इस युग के लोगों के बारे में थी।

1:15 "दोषी ठहराएँ"- प्रे.काम 17:31.

1:16इस पद में भक्तिहीन लोगों के पाँच चिन्ह दिए गए हैं।

"अपने...चापलूसी"- वे किसी बात में ईमानदार नहीं हैं। जो बातें लोग सुनना माँगते हैं, वही बताते हैं। उनका लक्ष्य है कुछ लाभ प्राप्त करना। क्या यह हम हर दिन नहीं देखते है। मुँह देखी बड़ाई के विषय में देखें अय्यूब 32:21-22; भजन 12:2-3; नीति. 26:28; 28:23; 29:5; रोमि. 16:18; 1 थिस्स. 2:5.

1:17 "याद रखो"- पद 5; 2 पतर. 1:12-15.

1:18 2 पतर. 3:3 से तुलना करें।

1:19 "आत्मा रहित"- वह पुनः कहता है कि शिष्य होने का दावा करने वाले ये लोग सच्चे शिष्य नहीं हैं। रोमि. 8:9 देखें। ध्यान दें, चर्च में सभी लोगों में आत्मा नहीं है। यूहन्ना 14:17; रोमि. 8:9,16; इफ़ि. 4:12.

1:20अब यहूदा दिखाता है कि शिष्य, धर्म त्याग और झूठे लोगों से कैसे बच सकते हैं।

विश्वास में बढ़ते और पवित्र आत्मा में
प्रार्थना करते हुए 21 अपने आपको परमेश्वर
के से प्रेम में बनाए रखो, तथा अनन्त (सदा
काल के) जीवन के लिए बड़ी तत्परता
से हमारे प्रभु यीशु मसीह की दया का
इन्तज़ार करते रहो।
22 जो शक करते हैं उन पर तरस खाओ
23 झपटकर बहुतों को आग में से निकाल
लो और दूसरों पर दया करो। यहाँ तक कि
देह द्वारा दूषित कपड़ों से भी घृणा करो।
24 अब जो तुम्हें ठोकर खाने से बचा
सकते हैं और अपनी महिमा के समय
तुम्हें निर्दोष और प्रसन्न हालत में खड़ा कर
सकते हैं, 25 उन एक मात्र परमेश्वर हमारे
मुक्तिदाता की महिमा, गौरव, प्रभुता और
अधिकार हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा
जैसा हमेशा से है, अब भी हो और भविष्य
में भी रहे। ऐसा ही हो।

"विश्वास में बढ़ते"- प्रे.काम 20:32; रोमि. 15:2; इफ़ि. 4:12-13; 1 थिस्स. 5:11 परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने और स्वयं पर लागू करने के द्वारा हम अपनी उन्नति कर सकते है। यह प्रत्येक विश्वासी का कर्तव्य है।

"पवित्र आत्मा में प्रार्थना करते हुए"- इफ़ि. 6:12.

1:21 मसीह अपने विश्वासियों को उद्धार की स्थिति में रखते हैं पद (1) विश्वासियों को चाहिए कि अपने आप को परमेश्वर के प्रेम में रखें। यह वचन की आज्ञा मानने से ही हो सकता है - यूहन्ना 14:21,23; 15:9-10.

"अनन्त...जीवन"- यहाँ इसका अर्थ है उसमें प्रवेश करना, जिसमे विश्वासी पहले ही से पहुँच चुके हैं (यूहन्ना 5:24; तीतुस 1:2; 3:6; 1 पतर. 1:5)।

"दया"- चाहे हम कितनी आज्ञा मानें और ऐसी स्थिति में रहें जहाँ परमेश्वर अपना प्रेम हमारी ओर प्रकट करें, सत्य मह है कि हमारा उद्धार आरम्भ से अन्त तक उनकी दया पर निर्भर है।

1:22 उनके प्रति कठोर और निर्दयी न बनें। उन्हें समझने का प्रयत्न करें और विश्वास करने में सहायता करें।

1:23 "बहुतों"- लोगों की हालत देखकर हमें अन्तर करते हुए कार्य करने की आवश्यकता है। कुछ लोग संदेह से संघर्ष कर रहे हैं और विश्वास करना चाहते हैं। दूसरे लोग बड़े खतरे में हैं और उन्हें बचाए जाने के लिए फुर्ती करनी है। वे परमेश्वर के 'आग के न्याय' के खतरे में थे (गल. 6:1 से तुलना करें)। हमें चाहिए कि बुरे व्यक्ति के प्रति प्रेम रखें और बुराई से घृणा करें।

1:24-25 यह बाईबल का सर्वश्रेष्ठ गीत है "ठोकर खाने से बचा सकते" - परमेश्वर हमें गिरने, ठोकर खाने या लड़खड़ाने से बचा सकते हैं - भजन 37:23-24; रोमि. 8:37.

"निर्दोष"- इफ़ि. 1:4; 5:26-27.

"प्रसन्न"- बहुत सी असफ़लताओं के दुख के बजाए।